मेटेरिया मेडिका पद्यावली

रचयिता

डा. पुरुषोत्तम भारद्वाज

भूतपूर्व रजिस्ट्रार- इंडियन इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल काउंसिल,

उत्तर प्रदेश, लखनऊ

सदस्य- इंडियन इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन बोर्ड, नागपुर, महाराष्ट्र

प्रकाशक- नेशनल फार्मेसी ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथी, मैटी नगर, चांदपार,

आजमगढ़, उत्तर प्रदेश

रिप्रिंटेड बाय

(एम० ज़ेड० राज़)

राज़ कम्प्यूटर, शेखदामू पुरा, मऊनाथ भंजन, मऊ, उत्तर प्रदेश

संदेश

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के जनक **सर काउंट सीजर मैटी** के 11 जनवरी सन 2026 को 217 **वां** जन्म दिवस समारोह पर मैटेरिया मेडिका पद्यावली के रचयिता **डॉक्टर पुरुषोत्तम भारद्वाज** के किताब को सादर समर्पित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि यह पुस्तक **इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा शास्त्र** से जुड़े समस्त प्रबंधको, प्रवक्ताओं, शोधकर्ताओं एवं छात्र-छात्राओं को इस अमृत काल में यह पुस्तक सभी लोगों के लिए वरदान सिद्ध होगी।

फूले नही समाये, रचना में अपार क्षमता है।

पढ़ने में मौज मिली मुझे, इसलिए अपार ममता है।।

डॉ रमाशंकर प्रसाद की प्रशंसा क्या करूं मैं ,जो इस पुस्तक को लिखवाए हैं।

डॉक्टर एम.अहमद भी साथ में रहकर, अत्यधिक जोश बढ़ाये हैं।।

धन्य है करनी इनकी, कभी लोग नहीं भुलाएंगे।

पढ़कर चिकित्सक, छात्र सभी अत्यधिक लाभ उठाएंगे।।

विश्वास है मेरा इस पर, यह सफल सिद्ध हो जाएगी।

भारत को कौन कहे, संसार में प्रसिद्ध हो जाएगी।।

धन्य है भारत के वीरों, जब लेखनी नहीं बंद होगी।

छंद, दोहा, चौपाई सभी, जन-जन को नित्य पसंद होगी।।

गद्य का संदेश पुरुषोत्तम, पद्य में रच डाले हैं ।

रचना इनकी है यथोचित, अभी भी रचने वाले हैं।।

शुभकामनाओं सहित

डॉ० मुमताज अहमद चेयरमैन

इंडियन इलेक्ट्रो होम्योपैथी मेडिकल काउंसिल, उत्तर प्रदेश

एवं इंडियन इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन बोर्ड, नागपुर, महाराष्ट्र

डॉ० रमाशंकर प्रसाद रजिस्ट्रार

इंडियन इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन बोर्ड, नागपुर, महाराष्ट्र

डॉ० दिनेश मिश्र रजिस्ट्रार

इंडियन इलेक्ट्रो होम्योपैथी मेडिकल काउंसिल, उत्तर प्रदेश

डॉ० मोहम्मद ज़ाहिद राज़ अध्यक्ष

इंडियन इलेक्ट्रो होम्योपैथिक डेवलपमेंट एसोसिएशन, उत्तर प्रदेश

समर्पण

किताब मेरी सादर समर्पित, डॉक्टर मुमताज़ विद्वान को ।

प्रकृति सदा बढ़ाती रहे, निर्मल उनके ज्ञान को।।

यह किताब है समर्पित आपको, महिमा इसकी बढ़ानी है।

जीवन में कांटे बहुत से आते, जीवन की यही कहानी है।।

विद्वान कभी घबरा करके, पैर इधर-उधर नहीं रखते हैं।

धीरज भर तूफान से लड़ते, अमृत रस को चखते हैं।।

विश्वास है मेरा आप पर, तूफान से लड़ने वाले हैं।

परमार्थ बिता दे जीवन, मानव वही निराले हैं।।

कफ प्रकृति के आप हैं ,स्वभाव उत्तम सिद्ध है।

आप ही के नाम पर बहरियाबाद प्रसिद्ध है।।

कफ प्रकृति भी मेरी है, आप ही से मेरा साथ है।

मेरी किताब छपवाने में, आप का पूरा हाथ है।।

संदेश

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के जन्मदाता के जन्मदिवस समारोह पर

आयुर्वेद के जन्मदाता, धनवंतरी के बाद भारद्वाज और चरक हुए ।

यूनानी के हकीम लुकमान, लेकिन इसे फरक हुए।।

एलोपैथी के महात्मा हिपोक्रेटिज, होमियो के महात्मा सैमुएल हनीमैन हुए।

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के महात्मा काउन्ट सीजर मैटी इटली के ही मैन हुए।।

एलोपैथ यूनानी की, खोज हुई यूनान।

आयुर्वेद का जन्म स्थान, भारत देश महान ।।

होम्योपैथी जर्मनी, इलेक्ट्रो होम्यो इटली देश।

नमन करते पांचों पैथी को, डॉक्टर पुरुषोत्तम का संदेश।।

दो शब्द

मैटेरिया मेडिका गद्य में लिखी, सब किताबें अच्छी हैं।

पद्य में रचित यह पुस्तक भी, अपने आप में सच्ची है।।

प्रथम मै उन विद्वानों का, अधिक हुआ आभारी हूं।

जिनके ज्ञान से यह पुस्तक, लिखने का किया तैयारी हूं ।।

अपने आप में ई.एच.पैथी सरल, सुंदर तथा सस्ती है।

इसलिए पूरे संसार में, हर मानव के दिल में जचती है।।

आभारी अत्यधिक हूं अपने प्रबंधक और प्राचार्य का ।

प्रशंसा कितना करूं डॉक्टर मुमताज के व्यवहार का।।

प्राचार्य का सहयोग सदा, हमको मिला करता है।

उनका अत्यधिक ज्ञान मेरा, संदेह दूर करता है।।

समय-समय पर ये लोग, हमको सराहा करते हैं।

चिंतित कितना भी रहूं , खुशियों से झोली भरते हैं।।

ऋणी इन लोगों का मैं, ऋण चुका सकता नहीं ।

करूंगा ई.एच. का गुणगान मगर सिर झुका सकता नहीं।।

मेरे पद्य की भाषा सरल, सुबोध तथा भोजपुरी है।

गलतियां अत्यधिक होगी सर पर बहुत मजबूरी है।।

अपने गलतियों के प्रति, पाठकों से क्षमा चाहता हूं।

क्षमा करने वालों को मैं, सदा से सराहता हूं।।

आई ई एच एम सी मेडिकल कॉलेज, बहरियाबाद में नमूना है ।

जहां से ई.एच.पैथी का प्रचार, रात चौगुनी दिन दुना है।।

भाग 1

डॉक्टर काउंट सीजर मैटी का जीवन परिचय

11 जनवरी 1809 में, काउंट सीजर मैटी ने जन्म लिए।

जन्म लेते ही, परिवार को प्रसन्न किए।।

देश इटली बोलोग्ना शहर का, नाम रहा।

जन्म से सेवा करना, यही उनका काम रहा।।

दीनों की सेवा मे, हमेशा ये तैयार रहे।

पैथियां अच्छी नहीं, इसी से लाचार रहे।।

पैरासोल्सस के नियमों पर, चलने वाले थे।

उन नियमों पर, चलते हुए भी निराले थे।।

हनीमैन साहब का, उस समय जमाना था।

दवा हर रोग का, सही उन्हें बनाना था।।

काउंट को लाक्षणिक तत्वों पर, नहीं विश्वास रहा।

इसी से हर समय, इनका मन उदास रहा।।

बड़े बुद्धिमान रहे,भारी इनका प्रयास रहा।

नई खोजो के प्रति, सदा इनका तलाश रहा।।

इनकी बगिया में, एक कुत्ता चर्म रोगी था।

ज्ञान इसी से हुआ, कुत्ता सर्व भोगी था।।

जड़ी बूटी पेड़ पौधों से, उन्होंने दवा तैयार किये।

हर मनुष्य के ऊपर सदा, इनका उचित व्यवहार किये।।

ओल्ड फोर्स नामक शक्ति को, आजमाया सही।

खरी उतरी हर कसौटी पर वो पाया सही।।

जापान में जब हैजे का, जोरा- जोर रहा ।

एस 10 नामक दवा का भी, चतुर्दिक शोर रहा।।

मैटी साहब ने, दवा एस 10 से इलाज किया।

कौन है रोगी अभी, इसका भी तलाश किया।।

देश- विदेश में ,इनका बड़ा नाम रहा।

जीवन भर सेवा करना, इनका सदा काम रहा।

1865 में इस पैथी का आविष्कार हुआ।

बड़े जोरों पर इसका, चारों तरफ प्रसार हुआ।

रसे रक्ते च शुद्दे यही इनका सिद्धांत रहा।

दवा ई.एच.का जो खाया, रोग से एकांत रहा।।

4 सितंबर 1895 ई. में मैटी का देहांत हुआ।

शोक से बिह्वल परिवार सारा क्लान्त हुआ।।

भारत वर्ष में इलेक्ट्रो होम्योपैथी का आगमन

भारत में 1885 ,मंगलूर में ये आयी है।

उसी से शाखा अपनी, चारों ओर बढ़ायी है।।

डॉक्टर बलदेव सक्सेना सबसे पहले, यहां अपनाये हैं ।

कार्य था अच्छा इसका ,सदा यही पाये हैं ।।

इंजेक्शन चालीस, पैसठ मेडिसिन रही।

दवा गुणकारी है, हमको यही यकीन सही।।

असाध्य रोगों को भी, साध्य ये बनाया है।

कुष्ठ, कैंसर रोगों को भी, ई.एच. ने भगाया है।।

सरल है सस्ती है, तथा गुणकारी है।

इलेक्ट्रिक सिटियो का, काम भी तो भारी है।।

चीड़ फाड़ सिस्टम नहीं, रोग को भागती है।

खर्च है कम, इसी से सस्ती ये कहलाती है।।

मैटेरिया मेडिका एक नजर में

स्क्रोफैलोसो ग्रुप की, दवा की मशहूरी है।

लिंफैटिकोज ग्रुप की, दवा भी तो जरूरी है।।

लसीका संस्थान पर दोनों का कार्य भारी है ।

अच्छी वनस्पतियों से, इनकी तो तैयारी है।।

रही एंन्जियाटिकोज, रक्त की औषधि भारी।

कैंसर, कैंन्सरोसोज, करती है, मारामारी।।

वर्मीफ्युगोस है, वर्म को मारन वाली।

बेनेरियों पैतृक, सुजाक, अरु उपदंश को तारण वाली।।

फैब्रिफ्युगोज है, फीवर को भगाने वाली।

पेटोरेल खांसी को है तुरंत खा जाने वाली।।

त्वचा जल, त्वचा को मुलायम बना देता है।

त्वचा की बीमारियों को, एकदम मिटा देता है।।

बिजलिया पांच ग्रीन, येलो, व्हाइट है।

रेड, ब्लू के काम, पूरे राइट है।।

ग्रीन का काम है, सडन ,गलन जहरबाद को मारने का।

येलो का काम है क्रृमी जिंदा, मुर्दा निकालने का।।

व्हाइट का काम लाइट है,वातज निर्बलता पर।

रेड की प्रसन्नता है, दर्द की सफलता पर।।

ब्लू का काम भी तो, हमने निराला देखा।

ब्लड कितना ही बहे, बंद कर डाला देखा।।

रक्त संस्थान पर इसका कार्य अच्छा है।

नीली बिजली से, शरीर की सुरक्षा है।।

औषधियां

इलेक्ट्रो होम्योपैथी के जन्मदाता 38 दवा बनाए हैं।

जर्मन के डॉक्टरों ने इनको मिलाकर ,नवीन 22 दवा उपजाए हैं।।

इस तरह से इस पैथी में, कुल 60 मेडिसिन हुई।

if3 निर्माता डॉक्टर इफ्तिखार की दवा बहुत शौकीन हुई।।

1988 ईस्वी में निर्मित, एक दवा की बढ़ी हुई।

इसके बाद 5 मेडिसिन बनकर चिकित्सक सामने खड़ी हुई।।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी की खोज शुरू, दवा और बढ़ जाएगी।

इस पैथी के आगे, सभी पैथी झुक जाएगी।।

दवा स्क्रोफ़ोलोसो ,पेटोरेल, फैब्रिफ्यूगो, लिंफेटिको है।

कैंन्सरोसो ,वेनेरियों वर्मीफ्यूगो तथा एन्जियाटिको है।।

बिजलिया और त्वचा जल मिलाकर, 65 दवा होती है।

उचित प्रयोग करने से इनसे, रोग सफाई होती है।।

औषधीय का वर्गीकरण

स्क्रोफ्लोसो में S1 से S12 तथा S.Lass दवा Sy है।

लिंफेटिको में L1 से L2, रस रक्त करत सफाई है।।

एंजियोटिको में A1 से A3, पेटोरेल में P1 से P9 औषधियां हैं।

फैब्रिफ्यूगो में F1 से IF 3 हरती बुखार जैसी व्याधियां हैं।।

वर्मीफ्यूगो में Ver1 से Ver2 , कृमि को करता नाश है।

कृमि नहीं उनको रहती, जो इसकी करता आश है।।

कैंसरोसो में C1 से C17 , कैंसरोसो की 17 बनी दवाई है।

बेनारियो में Ven1 से Ven5 , सुजाक, उपदंश करत सफाई है।।

बिजलियां पांच BE, RE, YE , GE व्हाइट है।

त्वचा के रोगों पर APP के काम पूरे राइट है।।

मैटेरिया मेडिका की परिभाषा

औषधियों के नाम, गुण एवं मात्राओं का, जहां अध्ययन किया जाता है।

चिकित्सा विज्ञान से हो संबंधित, उसे मैटेरिया मेडिका कहा जाता है।।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी का परिचय

इटली देश बोलोग्ना निवासी काउंट, इसे उपजाये हैं।

उत्पन्न किया 1865 ईस्वी में, जन-जन के समक्ष ये लाये हैं।।

निर्दोष, सरल ,सस्ती पैथी वैज्ञानिक, इसका सिद्धांत है।

प्राकृतिक दवा से है निर्मित, जो रोगों से करती एकांत है।।

स्विट्जरलैंड के दार्शनिक, पादरी दो सिद्धांत बनाए हैं।

15वीं शताब्दी के महान विद्वान का, सिद्धांत सभी अपनाये हैं।।

पहला पौधों में विद्युत शक्ति, दूसरा समान से समान भागते हैं।

समान से समान डॉक्टर हनीमैन, दोनों काउंट अपनाते हैं।।

कोहोबेशन विधि द्वारा , इसकी दवा बनाते हैं।

रस- रक्त है दूषित अगर किसी का, उसको सही कराते हैं।।

चैतन्य पदार्थ रस -रक्त दो, मानव शरीर में घूमते हैं।

इसमें है दूषित कोई एक तो, मानव रोग को चूसते हैं।।

दोनों अगर है शुद्ध तो, कोई रोग न होने वाला है।

रस रक्त शुद्ध दोनों से, पुरुषोत्तम बने निराला है।।

चिड़ -फाड़ सिस्टम नहीं, मगर रोग दूर भग जाता है।

अगर भयानक रोग किसी को, धीरजधर अजमाता है।।

एक दवा रस शुद्ध करें , दूसरी रक्त कर डाली है ।

सुनिए इलेक्ट्रो होम्योपैथी, सब में बनी निराली है।।

भाग 2

स्टोटमीटेल रेमीडिज

Stottmittel Remedies

Scrofoloso Groups

S1, S2, S3, S4, S5, S6, S7, S8, S9, S10, S11, S12, S.Lass, S.y.

स्टोटमीटेल नंबर 1

Scrofoloso No.1 or S1

कार्यक्षेत्र एवं गुण धर्म

एस 1 चयापचय की , मशहूर बनी दवाई है ।

पूरे शरीर की उचित, जिससे होती सफाई है।।

दवा ऑलराउंडर है, एंग्रावेशन को भगाती है।

वदहोशी वालों को भी, होशी में लाती है।।

जहर चाहे कैसा हो, उतरना इसका काम है।

जहर उतारने में, इसका सर्वप्रथम नाम है।।

धातु ,अधातु विष, चाहे जीवधारी का।

एस 1 को गर्व है, अपने मारा- मारी का।।

नशा हो कैसी, सुर्ती, शराब और अफीम का।

सुधारता है आदत सही, नशा के शौकीन का।।

हैजा को नाश करें , कंठमाला को भगाती है।

उत्तम है पाचक, रक्त कमी को हटाती है।।

जहर चाहे कैसा हो, उतारना इसका काम है।

जहर उतारने में, इसका सर्वप्रथम नाम है।।

उत्तेजना को शांत करै, कै को भी रोकती हैं।

कितना हो भयंकर रोग, अपने में सोखती है।।

नपुंनसकता , सिर दर्द, खूनी, वादी बवासीर में।

कान बहना ,नेल रोग, चाहे कोई रोग शरीर में।।

रोग को भगाना एस 1 का काम है।

सर्व शरीर रक्षक है, इसी से बड़ा नाम है।।

स्टोटमीटेल नंबर 2

Scrofoloso No.2 or S2

कार्यक्षेत्र एवं गुण धर्म

कब्ज को दूर करें एस 2 , का नाशक है।

कब्ज नहीं होती, जो इसका उपासक है।।

दूर कर देता है , मूत्राशय की पथरी को।

रोगी सुन लेता है, अपनी खुशखबरी को।।

कब्ज हो पुरानी उसको, जल्द ही से तोड़त है।

कब्ज ही के कारण तो, पेट भी मरोड़त है।।

आमाशय को साफ करें, नाशक कंठमाला का।

कितना बखान करूं, एस 2 निराला का।।

वायु दूर करती है, पेट को सुधारती है ।

एस 1 से कब्ज हुई तो, एस 2 उखाड़ती है।।

घेंघा रोग ,गठिया, सुजाक, बृक्क पथरी में।

बात पीड़ा, खुजली, प्रदर सर दर्द जवरी में।।

हाथ लकवा , वायु दर्द,टी.वी. कुलिंग दर्द।

बूढ़ा हो, बच्चा, या स्त्री जवान मर्द।।

हरत उपरोक्त रोग एस 2 कमाल है ।

इसको बनाया किसी, माई का लाल है।।

स्टोटमीटेल नंबर 3

Scrofoloso 3 Or S3

कार्यक्षेत्र एवं गुण धर्म

एस 3 से होती जी, चर्म की सफाई है।

जीर्ण त्वचा रोग की, उत्तम दवाई है।।

जिद्दी अकौंता में एस 3 प्रयोग करें।

साथ - साथ एस 3 का पूरा संयोग करें।।

स्पर्श शक्ति को बढ़ाती है, दस्त को घटाती है।

गुदा भंजन, हस्तमैथुन, इंद्रिय शक्ति को बढ़ाती है।।

धातु क्षीण, टांसिंल पीड़ा, रक्त संचय हो अंडकोष में।

जल जाना, कुचल जाना, कभी मद जोश में।।

नामर्दी में सुखी गोली , भोजन के बाद दे।

बहुत दिन पहले या, एस 3 को आज दे।।

ग्रंथि सूजन, जल जाना, छिल जाना फोड़ा में।

एस 3 चलाएं दर्द, अधिक हो या थोड़ा में ।।

Scrofoloso No.4 Or S4

Stottmittel No 4

कार्यक्षेत्र एवं गुण धर्म

एस फोर का कार्य क्षेत्र, पित्ताशय, बृक्क , यकृत है।

मूत्राशय और मूत्र प्रणाली ,आंत्र, पीड़ा स्वीकृत है।।

एस 4 में एस 2 एवं वेन 1 विद्यमान है।

मूत्राशय, प्रदाह, सुजाक में बलवान है।।

दूर करें रक्त कमी , नाशक कंठ माला का।

घाव सुखाना, पथरी नाशक, कार्य एस 2 निराला का।।

उपदंश नाशक , कब्ज नाशक, नाशक सरतान का।

रक्त प्रकृति के रोगियों पर, कार्य इस महान का।।

स्टोटमीटेल नं.5

Stottmittel No.5

Scrofoloso No. 5 Or S5

कार्यक्षेत्र एवं गुण धर्म

s5 में s2 तथा s3 के गुण मिलते हैं।

मनुष्य के शरीर में जब, कोई रोग पलते हैं।

एस 1 की भांति, आमाशय रोग भी हरता है ।

मनुष्य जब पीड़ा से, चिल्ला चिल्ला कर मरता है।

एस 1 से कब्ज हुई तो, एस 5 सुधार देती है ।

एस 3 की भांति, जीर्ण त्वचा रोग हर लेती है।।

सुधारना है आंत तो, एस 5 का प्रयोग करें ।

भोजन के बाद या पहले, इसका उपयोग करें।

गठिया, कैंसर, टीवी तथा त्वचा रोग नाशक है ।

आंत्र प्रदाह, घाव भरता, सबका बना प्रशासक है ।।

वायु गोला ,वृक पथरी , जीर्ण कब्ज ,अकौंता में।

नेत्र पीड़ा ,औधा फोड़ा, जीत लिया समझौता में।।

पीलपांव, आंत्र प्रदाह घेंघा रोग, बेवाई में ।

टाइफाइड ज्वर , कूलिंग दर्द, कमाल इस दवाई में।।

छाती ट्यूमर, बवासीर वादी, प्रदर जीर्ण जुकाम में ।

एस 5 आता सही, इन रोगों के काम में।।

पेशाब पथरी तथा देते हैं, हर प्रकार के दानों में।

बच्चा हो या बुढा, या रोग हो जवानों में।।

बाल गिरना, कमर पीड़ा, आधा सिर का दर्द ।

वातज निर्बलता में, बहरापन, स्त्री हो या मर्द।।

स्टोटमीटेल नंबर 6

Stottmittel No 6

Scrofoloso No 6

कार्यक्षेत्र एवं गुण धर्म

बृक्क पर प्रभाव इसका, सर्वप्रथम होता है।

बृक्क की पथरी से, मानव जब रोता है।।

देते हैं एस 6 दवा, रोग खत्म होता है।

रोगी ले चैन , आराम से सोता है।।

मूत्र वाहक संस्थान पर, एस 6 का प्रभाव रहा ।

इसके प्रयोग से, रोग का अभाव रहा ।।

बेकार खनिज पदार्थ को, बाहर निकाल देती है ।

ग्रंथियां के संधि को, एकदम सुधार देती है।।

हृदय के गठिया में, प्रयोग लाभदायक है।

उत्तम औषधि रही , रोग हरने लायक है।।

बर्फ के चूसने या, ठंडी वस्तु खाने से ।

आमाशय खराब है, तेजाब के जल जाने से।।

प्रयोग एस 6 का, बाहर निकाल देता है ।

पेशाब को बढ़ाकर, जहर निकाल देता है।।

जलोंदर रोग मे भी, कार्य इसका अच्छा है।

एस 2 तथा एस 17 से इसकी हुई परीक्षा है।।

हल्की मात्रा से, खराब छूटती आदत है।

पेशाब कर दे बिस्तर पर, जो स्वयं ही बिंराजत है।।

मूत्राशय रोग ,सूखा रोग, घूसा लगने का दर्द हो।

चोट लगने, वृक्क रोग, स्त्री या मर्द हो।।

हाथ पैर कांपता हो, मांसपेशियों के रोग में।

एस सिक्स से ठीक होता है, एक ही संयोग में।।

स्टोटमीटेल नंबर 7

Stottmittel No 7

Scrofoloso No.7 Or No.7

कार्यक्षेत्र एवं गुण धर्म

रक्त प्रकृति और कफ प्रकृति की ,बनी उत्तम दवा है।

मिश्रित प्रकृति के रोग भी, इससे हुए हवा है।।

संस्थान लसिका, श्लैष्मिक कला, आमाशय के शूल में।

सुन्न हाथ पैर, नामर्दी, मासिक, धर्म के मूल में।।

कष्ट से हो मासिक धर्म तो, छू देते इसे तुरंत।

दबे हुए मासिक धर्म की, दवा है बनी पेटेंट ।।

डॉक्टर पुरुषोत्तम कहते हैं, सुनो चिकित्सक भाई।

उपरोक्त रोग एस 7 हरता, दूर होता दुख दाई।।

स्टोटमीटेल नंबर 8

Stottmittel No.8

Scrofoloso No.8 Or S No.8

कार्यक्षेत्र एवं गुण धर्म

एस 1, ए 3 की सीमा में, आते रोग जहां है।

काम करता अकेला जब, एस 10 दवा यहां है।।

पित्त प्रकृति का रोगी, जाता रक्त प्रकृति पर।

एस 8 खा जाने से, जाता रोग निवृत्ति पर।।

रक्त पतला पड़ गया हो, जीर्ण हुई निर्बलता ।

एस 8 प्रयोग करने से, मिलती वहा सफलता।।

आर बी सी, डब्लू बी सी का, कार्य सुगम नहीं चलता।

मानव शरीर मे हरदम , रोग दिन प्रति दिन पलता।।

रोग हटता एस 8 से तथा सुधर जाता है।

मानव शरीर में रहने से, रोग मुकर जाता है।।

Stottmittel No.9

स्टोटमीटेल नंबर 9

Scrofoloso no.9 Or S9

कार्यक्षेत्र एवं गुण धर्म

एस 5 ,एस 1 की सीमा में, आते रोग बहुत से।

एस 9 करता ठीक अकेला, अपनी वहा पहुंच से।।

पेशाब में जलन पीली पेशाब, बूढों को नींद न आती।

ज्वर त्वचा रोग, श्लैंषमिक कला, इन रोगों में दी जाती।।

संस्थान लसिका, मेटाबोलिज्म को, देता सही सुधार।

आता रक्त पेशाब, नाक से, उचित करिए व्यवहार।।

पेशाब आती जल्दी-जल्दी पेशाब में होते ज़लनहै।

एस 9 का प्रयोग करने से, होता रोग शमन है।।

सुषुम्ना के म़ज्जा में ,होती अगर पीड़ा।

जलन होती भोजन नली में, एस 9 है भींड़ा ।।

स्टोटमीटेल नंबर 10

Stottmittel.No.10

Scrofoloso No.10 Or S10

कार्यक्षेत्र एवं गुण धर्म

एस 1,एफ1 के स्थान पर ,आती अकेला काम।

दस्त हैजा कै रोकने में, सिद्ध हुई महान।।

एक बार हैजा फैला, जापान की नगरी में।

हार गए जब पैथियां, हैजा की जबरीं में।।

दूर से सभी डॉक्टर , इलाज किया करते थे।

नजदीक आते नहीं, दूर रहा करते थे।।

दवा एस 10 से, मैटी साहब ने इलाज किया।

पैथियां हार चुकी थी, नाम अपना सिरताज किया।।

एस जियापुन नाम पड़ा ,आज भी स्थाई है।

हैजा नाश करने की , मशहूर बनी दवाई है।।

मशहूर है चीन जापान में, विशूचिंका के रोग में।

ठीक करता है एस 10 अपने उचित प्रयोग में।।

कफ ढीला करना हो तो, एस10 में पी 4 मिलाते रहिए।

जरूरत पड़े तो डब्ल्यू ई, खिलाते रहिए।।

त्वचा एवं बात सूत्रों पर, इसका कार्य अच्छा है।

साथ में एफ 1 देने से, बुखार की सुरक्षा है।।

हल्की डाइल्यूशन से, पसीना को रोक देती है।

उच्च डाइल्यूशन से, पसीना बाहर को फेंक देती है।।

करता है अच्छा हिस्टीरिया वहम, कूपच,कै, दस्त को।

मृर्गी ,कैंसर यकृत शूल, अर्रु पेचिश कष्ट को।

आधा सीसी , वातज पीड़ा, कंधों के बीच में दर्द हो।

इन्फ्लूएंजा, हे फीवर छाती जलन की मर्ज हो।।

पेशाब में जलन, बवासीर पीलिया वृक्क दर्द में।

रक्त प्रदर मूत्राशय पथरी सिफलिंस कमर दर्द में।।

प्रथम डाइल्यूशन देते हैं, पेचिश दर्द में भाई।

हैजा नाश करन की, एस10 बनी दवाई।।

स्टोटमीटेल नंबर 11

Stottmittel No.11

Scrofoloso No 11 Or S11

कार्यक्षेत्र एवं गुण धर्म

कै रोकने की, मशहूर बनी दवाई है।

आमाशय की पीड़ा को, जल्द करती सफाई है।।

गर्भवती स्त्री के, रोकती है मतली को।

प्रयोग जब करते रहें, एस 11 असली को।।

होती है यात्रा जब, जहाज़ रेल और मोटर से।

एस 11 मांगता है, मालिक अपनी नौकर से।।

करके प्रयोग इसका, दूर सफर करता है।

कै और मतली से, तनिक भी नहीं डरता है।।

हलक और आमाशय की, वात नाड़ियों पर कार्य है।

इसलिए एस 11 होती, वहां अनिवार्य है।।

आधा सीसी सन्निपात को, करती रही ये दूर है।

कै मे रामवाण कहलाई, इसलिए मशहूर है।।

स्टोटमीटेल नंबर 12

Stottmittel No.12

Scrofoloso No. 12 Or S12

कार्यक्षेत्र तथा गुणधर्म

एस 12 की कार्य सीमा बहुत थोड़ी है।

इसलिए नेत्र और कार्निया से ही, विशेष नाता जोड़ी है।।

आंख के हर प्रकार के रोग में, इसका प्रयोग करें।

आंख से आता हो पानी तो, एन्जियाटिको से संयोग करें।।

आंख में धब्बे पड़े, गंधक आयोडीन एवं पारे से।

मरहम प्रयोग करने से, गलती हो गई किसी बेचारे से।।

कंठमाला, रिकेट्स के बाद जब, मोतियाबिंद हुआ करता है।

एस 12 प्रयोग करने से, मोतियाबिंद ठीक हुआ करता है।।

अगर हो जीर्ण मोतियाबिंद, किसी को बुढ़ापे से।

मिलाये कैंसरोसो दवा,एस12 मे खूलासें से।।

गठिया रोग के कारण, यदि किसी को मोतियाबिंद होता है।

वहां पर ए2,सी5 तथा एस5 प्रयोग होता है।।

डॉक्टर पुरुषोत्तम कहते हैं, रेमेडीज है आई।

नेत्र रोग हरने की, उत्तम बनी दवाई।।

स्क्रोफोलोसो लसाटिको

Scrofoloso Lassativo

Or S.L Or SLass

कार्यक्षेत्र एवं गुण धर्म

यह औषधि जीर्ण अपच को, दूर किया करती है।

अगर पेट में कब्ज हो तो, उसको तुरंत हरती है।।

पेट के कूपच में अगर, दूसरी औषधि हारी है।

रोग न दूर किया बल्कि, समझो अपनी लाचारी है।।

आंत्र की यह, विशेष बनी दवाई है।

आंत्र में कब्ज हो तो, करती उसकी सफाई है।।

ना समझो कि यह, जुलाब होता है।

बल्कि रोग हर लेने का, इसमें रुबाब होता है।।

आंत्र की गुठली तथा, किसी का कोई बवासीर हो।

कड़ी वस्तु अटक जाने से, किसी की बिगड़ी हुई तकदीर हो।।

वहां पर देते हैं स्लास, आराम तुरंत होता है।

खड़ा हुआ हंसकर रोगी, जो तकलीफ से रोता है।।

संयमित रोगी रहे, आराम भी लाभदायक है।

जरूरत पड़ने पर ,वर टू एनीमिया भी सुखदायक है।।

न्यू कांस्टीट्यूशनल रेमेडीज

New Constitutional Remedies

Synthesis OR Sy

ऑल क्योर मेडिसिन,

एस वाई को कहते हैं।

हरती है सब रोग, जो शरीर में रहते हैं।।

कमांड सब रोगों की, करती ये दवाई है।

क्योंकि हर ग्रुप की , दवा इसमें मिलाई है।।

रक्त हो दूषित या, लसिका संस्थान रही।

शुद्ध करने में, सिद्ध हुई महान सही।।

रस और रक्त को, शुद्ध ये कर देती है ।

वाह्य् रोग कोई हो ,उसको भी हर लेती है।।

रस, रक्त शुद्ध करना, निर्भर है सिंथेसिस पर।

रोग सब दूर कर दे , बना है इसी बेसिस पर।।

डॉक्टर पुरुषोत्तम कहे, कमाल इस दवाई का ।

बखान खुद अपने करते , इस दवा आजमाई का।।

हुआ था खांसी रोग, रोगी परेशान रहा।

दवा एस वाई का पूरा वहा ऐलान रहा।।

पैंत्रृक रोग नाश करने की, भी इसमें क्षमता है।

इसी से एस वाई , से पूरी मेरी ममता है।।

खांसी ठीक हुई इसी से, मैं फरमाया हूं।

झूठ नहीं कहता हूं, इसको मैं आजमाया हूं।।

भाग -3 Part -3

लिम्फ रेमीडीज

Lymph Remedies

लिन्फैटिको समूह

Linfático Groups

L1, L2

लिन्फैटिको नंबर 1

Linfático No.1

कार्य क्षेत्र एवं गुण धर्म

लसीका के सफ़ेद कणों पर कार्य करती है ।

रक्त हुआ पतला तो, उसको भी सुधरता है।।

ग्रंथि में सूजन यदि रक्त संचय से होता है।

प्रदाह एवं बतौंड़ी से रोगी जब रोता है।।

एल 1 के देने से , रोग दूर होता है।

रोगी ले चैन , आराम से सोता है।।

आंत काम नहीं करती, होती लिकोरिया है।

खुजली, स्कर्वी से, घेरी मजबूरियां है।।

कैंसरोसो औषधियां, लिंफेटिकों के साथ रहे।

साथ में बेनरियों, जब उपदंश अरु सूजाक रहे।।

चूना फास्फेट , यूरिक एसिड निकालती है।

गठिया तथा बाई रोग, जड़ से उखाड़ती है।।

छाती दर्द, ग्रंथि कडा, दमा, दांत नासूर में।

मासिक पीड़ा, सिर दर्द, खूनी वादी बवासीर में।।

मूल रोग डायबिटीज , सूजाक एवं फोड़ा में ।

नाक में नाकडा बवासीर, अधिक दर्द या थोड़ा में।।

प्रयोग इसका करने से, रोग नाश हो जाता है।

रोग दूर हो जाने से, रोगी चैन से सोता है।।

दस्त, फोड़ा वायु शूल में, देते इसे खिंलाय।

सुखा और बाई रोग से, देता प्रथम बचाय।।

लिन्फैटिको नंबर 2

Linfatico No.2

OR L 2

कार्यक्षेत्र एवं गुण धर्म

इस औषधि में, ए 3 ,एस 1 तथा लिंम्फ मिले होते हैं।

लसिका तथा रक्त शुद्ध करने पर , एल 2 तुले होते हैं।।

एल 2 रक्त के लाल, श्वेत कणों की, बनावट पर कार्य करती है।

अगर किसी को ऐसा रोग है, तो तुरंत उसको हरती है।।

कार्य विधि ठीक करती है, इन सभी अंगों का।

जीवन है सुखमय किया, बहुत रोगी तंगों का।।

सुधार कर सब अंगों का कार्य, स्वस्थ्य बना देती है।

रोगी है अगर कमजोर तो, जबरदस्त बना देती है।।

गनोंरिया, ल्कोंरिया तथा काम करती है बवासीर में।

ठीक करती उपरोक्त रोग , जब होती हैं शरीर में।।

भाग 4 Part 4

Blood Remedis

ब्लड रेमीडीज

Angiotico Groups

एन्जियाटिको समूह

A1. A2. A3

एन्जियाटिको नंबर 1

Angiotico No 1 Or A1

कार्य क्षेत्र तथा गुण धर्म

महाधमनी तथा सभी रक्त धमनियों पर, इसका प्रभाव रहा।

बाएं भाग के धमनी पर भी , यही मेरा सुझाव रहा।।

फुफ्फुस, यकृत तथा अन्य भागों में, शुद्ध रक्त ले जाती है।

रक्त शुद्ध करना काम है इसका, यही हमको सिखलाती है।।

हाथ पैर ठंडा पड़ जाए , सिर में चक्कर आता हो।

नीली पीली शरीर पड़ जाए, कानों में शब्द भनभनाता हो।।

ठीक करती जल्द उसको, उचित इसका कार्य है।

अगर ऐसा रोग है तो, प्रयोग इसका अनिवार्य है।।

अगर माथे में दर्द हो तो, माथे पर काम्प्रेस लगाते हैं।

दस पन्द्रह गोली गर्म पानी में घोलकर, लोशन पैर पर चढ़ाते हैं।।

रक्त संचार शरीर में, आसानी से होता है ।

कष्ट होता दूर उसका, जो परेशानी से रोता है।।

हल्के डाइल्यूशन में रक्त की, मात्रा को घटा देती है।

तीव्र मात्रा में रक्त की, मात्रा को बढ़ा देती है।।

अंग सूख गया किसी का, रक्त नहीं जब जाता है।

उचित ए वन का प्रयोग होने से, अंग सुधर जाता है।।

मासिक धर्म की गड़बड़ी को, आसानी से सुधारती है।

मूल हो रोग रक्त से, उसको भी उखड़ती है।।

अगर किसी को गड़बड़ी हो, दबे मासिक धर्म से।

बता नहीं सकती स्त्री, रोग मारे शर्म से।।

वाई रोग टॉन्सिल प्रदाह, रक्त आता थूक में।

शिरा प्रदाह, टाइफाइड ज्वर, लू लगता भूल -चूक में।।

नकसीर फूटना रक्त प्रदाह, सुस्ती शरीर में आती है।

पैर सूजन, चक्कर आता, खूनी बवासीर में दी जाती है।।

शुक्राणु कमी ,नपुंसकता में, रहिए इसे खिलाते।

ए वन का प्रयोग करने से, रोग अधिक कट जाते।।

रक्त संचालन तीव्र करके, रक्त प्रदाह बढ़ाता है।

मासिक धर्म यदि बंद हो तो, ए वन से खुल जाता है।।

एन्जियाटिको नंबर 2

Angiotico No 2 Or A2

कार्यक्षेत्र एवं गुण धर्म

ए 2 का विशेष प्रभाव, शिराओं पर होता है ।

शिरा संबंधित कष्ट हो तो , ए 2 से अच्छा होता है ।।

ए 2 शिराओं के सिकुड़ने में, काम करता है।

खून को रोक कर , रोगी को आराम करता है।।

शिराओं में थैली, गुल्थी पड़ जाने से, रोगी परेशान होता है।

वहां ठीक करने के लिए, ए 2 का पूरा ऐलान होता है।।

आंतों में यह रोग होकर, बाद में बवासीर होती है।

स्वास्थ्य गिर जाता है, बिगड़ती शरीर होती है।।

धमनियों में जब रक्त और मांस के टुकड़े जम जाते हैं।

चाहे हो मवाद के, चाहे हो रक्त के, कम हो जाते हैं।।

थ्रांबोसिस रोग को, आसानी से सुधरता है।

रोगी ठीक हो जाता है, जो परेशानी से कराहता है।।

रक्त की कमी में,स्क्रोफोलोंसो के साथ देते हैं।

रक्त संचार की गड़बड़ी में, वाह्य प्रयोग कर देते हैं।।

हृदय तथा शिराओं का , रक्त संचालन ठीक करता है।

सूखा रोग, धमनी का फूलना काम्प्रेस उसको हरता है।।

खूनी पेचिश ,गूंगापन , खांसी से रक्त अब जाता है।

रक्त संचय, सुर्खवादा , पेशाब कष्ट से आता है।।

खून आता फेफड़ो से, गुर्दों में होती पथरी।

आंतों से आता रक्त वहां, ए 2 करता जबरी।।

रक्त संचय के कारण, यदि होता है वातज पीड़ा।

पीलिया में फैब्रिफ्यूगो साथ, प्रेम से ए 2 भिड़ा।।

प्रथम डाइल्यूशन ए 1 की तरह, देते इस खिलाय।

दस्त,सूखा ,वाई रोग से, देता तुरंत बचाय।।

एन्जियाटिको नंबर 3

Angiotico No.3 Or 3

कार्यक्षेत्र एवं गुण धर्म

ए 1 धमनियों की तथा, ए 2 शिराओं की दवा हुआ करती है।

लेकिन ए 3 हृदय को मजबूत किया करती है।।

रक्त की कोई कमी हो, उसको सुधार देता है ।

रक्त कमी के रोग को, बिल्कुल उखाड़ देता है।।

जब लसीका ऑक्सीजन से मिलकर , रक्त को बनाता है।

वहीं से ए 3 का कार्य, तुरंत प्रारंभ हो जाता है।।

रक्त कमी, हरा निमोनिया, जब रक्त पतला पड़ जाता है।

कमजोरी दूर होती है वहां, ए 3 को दिया जाता है।।

धमनी रोग, हृदय पीड़ा, दमा में आती काम है ।

रक्त संचय ,रक्त कमी ,क्षयी और सरतान है।।

दिल धड़काना ,पित्ती निकलना, स्वर यंत्र की जीर्ण प्रदाह हो।

धमनी का फूलना, हृदय रोग, रोगी करता आह हो।।

ए 1 की भांति प्रथम देते हैं, रोग दूर हो जाते हैं ।

रोग भगाने के लिए, मजबूर वहां हो जाते हैं।।

भाग 5. Part 5

पेटोरेल रेमीडीज

Pettorole Remedis

Pettorole Groups

P1 ,P2 , P3 , P4. ,P 5 , P6,P 7 ,P 8, P 9

पेटोरेल नंबर 1 (P1)

कार्यक्षेत्र एवं गुण धर्म

बलगम में बदबू, रक्त आने पर, करते प्रयोग बंद।

बल्कि पी 2 का प्रयोग करना, करते वहां पसंद।।

काली खांसी, कुक्कुर खांसी, आती दमे की खांसी है।

वायु प्रणाली की खराश, बलगमी खांसी, चेहरे पर जिसे उदासी है।।

फुफ्फुस प्रदाह,हलक प्रदाह, कष्ट से दांत निकलता है।

स्वरयंत्र प्रदाह, आवाज बैठना, कोई कष्ट से भोजन निगलता है।।

सूखी खांसी, वायु प्रणाली की प्रदाह में, देते प्रथम खिंलाय।

फुफ्फुस आवरण की प्रदाह से, पी 1 देत बचाय।।

पेटोरेल नंबर 2 (P2)

कार्यक्षेत्र एवं गुण धर्म

टी.वी. रोग में पी 2 ,विशेष लाभदायक है।

सीटू तथा एस 5, पी 2 के अत्यंत सहायक है।।

टी.वी. के दूसरे स्टेज में, इसका प्रयोग जारी है।

टी.वी. के कीटाणुओं को दवा, करता मारा-मारी है।।

फेफड़ों से बदबूदार बलगम तथा रक्त जब आता है।

वायु प्रणाली के घाव में, इसका वाह्य प्रयोग किया जाता है।।

पीटू का प्रयोग, अंडकोषों पर भी होता है।

अधिक कामवासना से मनुष्य, स्वास्थ्य को खो देता है।।

अधिक कामवासना से मनुष्य को, टी .वी.हुआ करती है।

पैत्रृक टी.वी.पी 2 और वेनेरियो के, प्रयोग से वहां सुधरती है।।

कफ को ढीली करके, बाहर निकाल देती है ।

छाती की पीड़ा है अगर, एकदम सुधार देती है।।

पेटोरेल नंबर 3 P3

कार्यक्षेत्र एवं गुण धर्म

इस औषधि का मुख्य प्रभाव, टेटुवे तथा वायु प्रणाली पर है।

दमा रोग ,साधारण खांसी, उपयोग काली खांसी पर है।।

सूखी खांसी में प्रथम डाइल्यूशन ,रोगी लेत तत्काल।

तुरंत मिलती राहत इससे कट जाता है काल।।

बच्चों की खांसी,दमा, देते द्वितीय खिलाय।

चैन से खाता, चैन से सोता, रोग दूर हो जाय।।

फुफ्फुस प्रदाह, कुक्कुर खांसी, बच्चों की चलती फंसली।

उपरोक्त रोग हरने की ,दवा बनी है असली।।

पेटोरेल नंबर 4 P4

कार्यक्षेत्र एवं गुणधर्म

पी 3 बच्चों तथा स्त्रियों के लिए, उपयोगी है।

पी 4 वहा प्रयोग करें, जहां बूढ़ा रोगी है।।

यह विशेषकर बूढ़ों की , बनी दवाई है ।

श्वास संस्थान के रोगों का, उचित करती सफाई है।।

कफ आसानी से निकालने के लिए ,प्रयोग लाभदायक है।

पी 1 या पी 2 जब बनती, इसकी सहायक है।।

अधिक बोलना, नेता अध्यापक, कोई पीता सिगरेट शराब है।

चाय तंबाकू हुक्का अल्कोहल, से आदत बनी खराब है।।

अगर किसी को तेज रोग हो तो, प्रथम देत पिलाय।

रोग भयानक अगर किसी को, देता उसे बचाय।।

पेटोरेल नंबर 5. P5

कार्यक्षेत्र एवं गुणधर्म

पैतृक क्षयी रोग में, पी 5 बहुत लाभदायक है।

सी 5 के गुण इसमें मिलते, इसलिए सुखदायक है।।

पी 2 मे सी 2 के गुण, सदा रहा करते हैं।

पी 2 की अपेक्षा पी 5, अच्छा काम करते हैं।।

पेटोरेल नंबर 6 P6

कार्यक्षेत्र एवं गुणधर्म

पी 6 में पी 1 तथा सी 5, मिले होते हैं।

जीर्ण खांसी,साधारण खांसी, अच्छा करने पर तुले होते हैं।।

वेनेरियो औषधि के गुण भी, इसमें पाए जाते हैं।

फेफड़ों की बनावट, वायु प्रणालियों पर गुण आजमाये जाते हैं।।

पेटोरेल नंबर 7. P7

कार्यक्षेत्र एवं गुणधर्म

प्रयोग इसका वहां करिए, जब ज्वर रोग पुराना है।

जब रक्त आता फेफड़ों से , तब पी 7 वहां खिलाना है।।

शामिल है ए 1 के गुण, वेनेरियो इसमें नहीं आती है।

पी 5 की तरह यह औषधि, रोगी को हमेशा भाती है।।

शुक्राणु कमी ,इंपोटेंसी में, इसको भी खिलाते हैं।

बुरी आदत मारफीन से, दूर सब हो जाते हैं।।

वात सूत्र कमजोर होत है , ब्रेन भी होत खराब है।

हृदय की गठिया में भी , पी 7 देत जवाब है।।

पेटोरेल नंबर 8 P8

कार्यक्षेत्र एवं गुणधर्म

इस औषधि में ए 1 के स्थान पर, एफ 1 दवा मिली है।

तीव्र ज्वर अरु क्षय रोग अच्छा करने पर, पी 8 वहा तुली है।।

क्षय रोग में रात को पसीना अधिक ,जब किसी को होता है।

प्रयोग इसका वहां उचित है, रोगी आराम से सोता है।।

इस प्रकार इसका मिश्रण,पी 4 से मिलता -जुलता है।

ठीक होता एफ 1, ए 1 से , जो इस श्रेणी में पलता है।।

पेटोरेल नंबर 9 P 9

कार्यक्षेत्र एवं गुणधर्म

इस औषधि में फेब्रीफ्यूगो, औषधियां सम्मिलित हैं।

साथ में ज्वर फुफ्फुस रेजिश, वायु प्रणाली में प्रयोग इसका उज्जवलित है।।

भाग 6 Part 6

Neurotic Remedies

न्यूरोटीक रेमीडीज

Febrifugo Grops

F1, F2

फेब्रिफ्यूगो नंबर 1 F1

कार्यक्षेत्र एवं गुणधर्म

विशेष कर ज्वर रोग की, यह उत्तम दवाई है।

बात संस्थान रोग की भी, उचित करती सफाई है।।

पागलपन रोगी पर भी, इसका कार्य अच्छा है ।

बात संस्थान को शुद्ध करके, करता शरीर की रक्षा है।।

हल्की की मात्रा देने से, बात नाडिंयों को कम कर देता है।

तीव्र मात्रा में देने से, बात नाडिंयों को उत्तेजित कर देता है।।

हल्की मात्रा से इसके, तेज बुखार को कम करते हैं।

तेज मात्रा से इसके, जुड़ी बुखार को हरते हैं।।

नींद लाना,ज्वर भगाना, पेशाब लाने वाली है।

प्रदाह एवं तशन्नुज को, दूर भगाने वाली है।।

चर्म रोग ,प्लीहा के रोग, ज्वर जब तेज आता है ।7

पेट फूलना पेट में दर्द , आंत्र प्रदाह में दिया जाता है।।

नाक में नाकड़ा जब होवे, तो देते सी 4 के साथ ।

नाक का नाकड़ा दूर होत है, जब एफ 1 करें मुलाकात।।

वातज दौरे, पीलिया में, इसको रहे खिलाते।

बातज दौरे पीलिया रोग, एफ 1 से कट जाते।।

यकृत प्लीहा, अगर बढा है, उसको देत सुधार

पित्त प्रकृति के रोगियों का, कब्जा है देत उखाड़।

ज्वर जुकाम को ठीक करें, आराम तुरंत देता है ।

रोग दूर होने से रोगी , तब चैन से सोता है।।

फैब्रिफ्यूगो नंबर 2 F 2

कार्य क्षेत्र एवं गुणधर्म

यकृत प्लीहा बढ़ गया हो तो, अंग कड़ा कोई पड़ता है।

कहीं बतौडी बन जाए तो, एफ 2 कांप्रेस दर्द हरता है।।

प्लेग, मस्तिष्क ज्वर में , एफ 2 का आंतरिक प्रयोग करें।

जब लाभ न हो एफ 1 से, तब एफ 2 का उपयोग करें।।

पेट की बीमारी , यकृत प्लीहा, प्रदाह युक्त जब फोड़ा है।

काम्प्रेस लगाये नंबर 24 पर, अधिक दर्द या थोड़ा है।।

भाग 7 Part 7

इन्टेस्टाइनल रेमीडीज

Intestinal Remedies

वर्मीफ्यूगोज समूह

Vermifugo Groups

Ver 1. Ver 2

वर्मीफ्यूगो नंबर 1 Ver 1

कार्यक्षेत्र एवं गुणधर्म

वर्मीफ्यूगो आंत की, प्रमुख बनी औषधियां है।

ठीक होता है मनुष्य जब, आंत की कोई व्याधियां है।।

जिंदा या मुर्दा कीड़ों को, बाहर निकाल ये देती है।

आंत में कोई खराबी है तो, उसको सुधर ये देती है।।

कीड़े हो चाहे आंतो में , यकृत में हो, चाहे क्षयी रोग, डिप्थीरिया में।

कैंसर, चेचक, पेचिश हैजा, कोई रोग शरिरीया में।।

सदा निकाल कर बाहर करना, यही इसका काम है।

वर्म निकालने वालों में, प्रथम इसका नाम है।।

आंत में कीड़े कहां से आते , यह भी सोच जरूरी है।

फल, भोजन, पानी से आते, यही तो मजबूरी है।।

इस माध्यम से पहुंचते हैं, अगर आंत गंदा है ।

अंडा ,बच्चा देकर पनपते, इसका यही तो धंधा है।।

आंत अगर है साफ तो, यह आंत में नहीं टिकते हैं।

आंत साफ करता वर 1, यही पुरुषोत्तम लिखते हैं।।

पेचिश, दस्त, कब्ज, को सदा ठीक ये करती है।

अगर है कीड़ा किसी व्यक्ति को, आसानी से हरती है।।

वर्मीफ्यूगो नंबर 2 Ver 2

कार्य क्षेत्र एवंगुणधर्म

वर 2,वर 1 से, मुलायम हुआ करती है ।

अगर है कीड़े तो, उसको निकाला करती है।।

जब भी वर 1 कार्य ठीक न करे तो ,वर 2 का उपयोग करें ।

स्नान, त्वचा रोग तथा, वातज रोग में प्रयोग करें।।

भाग 8 Part 8

टिशू रेमीडीज

Tissue Remedies

कैन्सरोसो समूह

Cancereso Groups

C1 C2 C3 C4 C5 C6 C7 C8 C9 C10 C11 C12 C13 C14 C15 C16 C17

कैन्सरोसो नंबर 1 C1

कार्य तथा गुणधर्म

जीर्ण खांसी, काली खांसी, कान से मवाद जब बहती है।

अच्छा होता है जीर्ण सुजाक, जब वेनेरियो साथ में रहती है।।

श्रैलैष्मिक कला में हो गुमड़, खुजली जिसे पुरानी है ।

हलक ग्रंथि की हो प्रदाह, जननेन्द्रियों से परेशानी है।।

मासिक धर्म में हो कमी , तथा मासिक कष्ट से होता है।

प्रदर रोग हो अगर किसी को, सी 1 से नष्ट हो जाता है।।

स्त्रियों के लिए सी 1, आदि से अंत तक लाभकारी है ।

साधारण हो या गर्भवती, प्रयोग इसका गुणकारी है।।

गर्भवती का गर्भ सुरक्षा, आसानी से करती है।

प्रसव काल के पीड़ा को भी, आसानी से हरती है।

प्रत्येक प्रकार के कैंसर की, कैंसरोसो बनी दवाई है।

यूट्रस कड़ा पक रहा हो, घाव की तरफ सफाई है।।

एलोपैथी की कोई दवा, कैंसर न ठीक किया है ।

ई.एच.पैथी ठीक किया कैंसर, जो धीरज से काम लिया है।।

कैंसर का इलाज करें तो, साल दो साल जरूरी है।

देर से शुद्ध होता रक्त, लसीका, यही तो मजबूरी है।।

हड्डी रोग, जलोंदर ,भगंदर, जहरबाद से दर्द है।

डायबिटीज, वायु शूल, मूर्छा, गर्भाशय गिरना का मर्ज है।।

मोतियाबिंद, पानी भर जाना, डिप्थीरिया से ,जिसे परेशानी है।

मासिक धर्म कष्ट से होता, सी 1 वहां खिलानी है।।

सी 1 से जीवन हुआ सुरक्षित, माताओं, बहनों का ।

होता सुधार जीवन पर्यन्त, इनके रहन सहनो का।।

कैंसर को ठीक करने के लिए, कैंसरोसो ग्रुप की प्रथम दवा है।

जो प्रयोग किया उचित इसका, कैंसर न उसको हुआ है।।

कैंसरोसो नंबर 2 C2

कार्य तथा गुणधर्म

एस 2 की भांति अपना प्रभाव मूत्र मार्ग ,मूत्र नली तथा वृक्क पर रखती है।

बन गए कैंसर, गुमड़ ,बतौडीं तो, सी6 की सहायता करती है।।

यह औषधि जीर्ण, कब्ज तथा, बवासीर के लिए लाभदायक है।

बढ़ती आंतों की शलैंष्मिक कला, ग्रंथियो के कार्य इसलिए सुखदायक है।।

मूत्राशय, कैंसर, मूत्राशय, रेजिस, जब छाती में पानी भरता है।

मूत्राशय पकना, मूत्राशय बतौडीं, जलोदर को अच्छा करता है।।

अंडकोष ,जोड़ों में पानी, जब कभी किसी को भरता है।

सीटू प्रयोग करें वहां पर, आसानी से हरता है।।

खांसी के समय फेफड़ों में जब, अधिक बलगम पैदा होता है।

बलगम सफेद, चिपचिपा, रेशेदार ,सीटू से फायदा होता है।।

यकृत तथा पित्ताशय रोग में, एफ1, सी2 का प्रयोग करें।

अगर कभी ऐसा दशा है, एस2 भी उपयोग करें।।

पाखाना, पेशाब को लाती, कैंसर को भी दूर करें।

अंडकोष प्रदाह और कंठमाला, अच्छा करने को मजबूर करें।।

कैंसरोसो नंबर 3 C3

कार्यक्षेत्र एवं गुणधर्म

ए3 की भांति, इसका कार्य भी लाभदायक है।

त्वचा, आंत तथा त्वचा नीचे के सेल्स पर, कार्य सुखदायक है।।

त्वचा रोग पर इसका कार्य, होता सदा गुणकारी है।

प्रयोग एस 3 के साथ इसका, होता सदैव सूखकारी है।।

तेजाब से जलना, पाला मारना, प्रयोग सेल्स बर्बादी में।

गहरे घाव, सड़न गलन, त्वचा की क्षय खराबी में।

जोड़ों के तीव्र प्रदाह में, प्रथम डाइल्यूशन देते हैं।

द्वितीय से हड्डी की म्यूकस मेंब्रेंन की, प्रदाह भी हर लेते हैं।।

द्वितीय डाइल्यूशन वहां भी देते, नासूर जहरीला फोड़ा है।

रोगी आराम तुरंत पा जाता, जो इसे नाता जोड़ा है।।

कैंसरोसो नंबर 4 C4

कार्यक्षेत्र एवं गुणधर्म

हड्डी रोग पर यह औषधि, विशेष हुई लाभकारी है।

खनिज पदार्थ, सेलों और सूत्रों जमते, वहां पर लाभकारी है।।

दांत में कीड़ा, दांत का टूटना, तथा दांत जब गलने लगता है।

बच्चों के लिए है लाभकारी, जब बेकायदे दांत निकलने लगता हैं।।

हड्डी मे चोट, हड्डी टूटना, सब में यह लाभदायक है ।

हड्डी के रोग में प्रयोग, इसका सर्वदा सुख दायक है।।

कान बहना, कंठमाला तथा ये कैंसर नाशक है ।

अच्छा होता है ऐसा रोगी, बना जो इसका याचक है।।

कैंसरोसो नंबर 5. C5

कार्यक्षेत्र तथा गुणधर्म

फोड़ा फुंसी, जीर्ण कूपच, जोड़ कड़ा जब होता है।

कोंढ, प्रदर ,पागलपन दौरा, दर्द कैंसर से रोगी रोता है।।

गठिया, सुजाक और हिस्टीरिया, छाती में जलन जब होती है।

कंठमाला उपदंश, बिषहरी, स्त्री मासिक कष्ट से जब रोती है।।

स्वप्नदोष ,टीवी, लकवा, आधा सीसी का जब दर्द है ।

गर्भाशय प्रदाह, गर्भाशय में ऐंठन, कोशिकाओं का मर्ज है।।

पीलपाव, मृर्गी, डिप्थीरिया, आंखों में रोग पुराना है।

डायबिटीज लोढर, बहरापन सी5 वहां खिलाना है।।

छाती तथा गर्भाशय में ट्यूमर, कान कभी जब बहता है।

ग्रंथि कड़ा दाद, जलोदर, रोगी टाइफाइड ज्वर में रहता है।।

फोड़ा पकता, पीड़ा हरता, रोता कोई जब बच्चा है।

पीड़ा को दूर करके, करता शरीर की रक्षा है।।

बहरापन प्लेग बतौडी, सूत्र जब बढ़ जाता है।

मोतीझरा अगर है फीवर, उसको आराम कर जाता है।।

कैंसरोसो नंबर 6. C6

कार्य तथा गुणधर्म

यह औषधि एस6 की तरह, करती हमेशा कार्य है।

रोग मूत्राशय तथा मूत्र मार्ग में, देना इसे अनिवार्य है।।

यूरिक एसिड तथा खनिज पदार्थ, जब कभी जम जाते हैं।

दूषित पदार्थ जमा होने पर, गठिया रोग हो जाते हैं।।

इसके प्रयोग से गठिया रोग, दूर सदा हो जाता है।

सी6 से रोग भगाने के लिए, मजबूर सदा हो जाता है।।

पथरी के कारण पेशाब बंद में, पहला डाइल्यूशन देते हैं।

पेशाब उतरती आसानी से, रोगी आराम ले लेते हैं।।

मूत्राशय में हो प्रदाह तथा पेशाब में एल्बूयुमिन आता है।।

मूत्र में है यदि रक्त आता , सी6 फायदा कर जाता है।।

कैसरोसो नंबर 7. C7

गुणधर्म तथा कार्य क्षेत्र

इस औषधि में ए2 तथा सी5 औषधि मिली रहती है।

शिराओं के फूलने तथा, जीर्ण रक्त संचय में ये चलती है।।

हृदय का दाहिना भाग टेढ़ा पड़ जाए, जीर्ण होत बवासीर है।

शिराओं में मवाद तथा रक्त संचय से, दुबली होत शरीर है।।

ऐसी दशा में प्रयोग इसका, सर्वदा सुखदायक है ।

अगर है ऐसा रोग कभी तो, प्रयोग सदैव सुखदायक है।।

कैंसरोसो नंबर 8 C8

कार्यक्षेत्र तथा गुणधर्म

एफ 1,सी10 तथा एस2, या औषधि निर्मित है।

यकृत प्लीहा ,कड़ा पड़ जाए तो, इसका प्रयोग चर्चित है।।

विशेष प्रभाव ग्रंथियों, श्लैष्मिक कलाओं, बड़ी आंत तथा मलाशय पर है।

कुनैन के दुष्परिणामों से आंतों की बर्बादी, पथरी ,पित्ताशय पर है।।

कैंसरोसो नंबर 9. C9

कार्य क्षेत्र तथा गुणधर्म

यह औषधि ए3 सी5 तथा एस1 से, मिलकर बनती है।

यह लसीका को रक्त में, आसानी से वहां बदलती है।।

आरबीसी का निर्माण करती, प्रभाव संपूर्ण ग्रंथि संस्थान पर है।

प्लीहा, फेफड़े, अमाशय घाव, प्रभाव अमाशय सरतान पर है।।

आमाशय के कैंसर की यह, उत्तम बनी दवाई है।

ग्रंथियो तथा लसीका के अवयवों की, करत सदा सफाई है।।

कैंसरोसो नंबर 10. C10

कार्यक्षेत्र तथा गुणधर्म

यह औषधि कैंसर, जीर्ण कुपच नाशक, रक्त तथा लसीका को शुद्ध करती है।

जीर्ण मलेरिया तीजारी , चौथिया तथा कुनैन के दुष्परिणामों को हरती है।।

यकृत प्लीहा बढ़ाने पर भी, इसका प्रयोग लाभदायक है।

जिद्दी कब्ज आंत्र शूल में, दो-दो गोली, घंटे पर सुखदायक है।।

अमाशय, कैंसर ,आंतो के रोग, उपदंश गर्भवती मतली में।

पीलिया ,पीनस, गालस्टोंन, रीड़ की टी .वी. असली में।।

कैंसरोंसो नंबर 11. C11

कार्यक्षेत्र तथा गुणधर्म

यह औषधि ए2 सी5 एस5 तथा, एल 1 से मिलकर बनती है।

घाव ,फोड़े ,जोड़ों में कड़ापन, सूजन में ये चलती है।।

इसका प्रभाव यकृत, त्वचा तथा मांसपेशी संस्थान पर है।

लसीका उत्पन्न करने वाली, ग्रंथियो आंतो अमाशय सरतान पर है।।

कैंसरोसो श्रेणी में सी 11 का, बहुत वृहद उपयोग है।

अच्छा होता है जीर्ण रोग, चाहे कितना भी कुरोग है।।

कैंसरोसो नंबर 12 C12

कार्य तथा गुणधर्म

यह औषधि ए1, सी1, एस7, एस8 से बनाई जाती है।

ग्रंथि तथा संपूर्ण रक्त संस्थान, श्लैंष्मिक कला पर आजमाई जाती है।

सी12 का प्रयोग सदा तीब्र प्रदाह में लाभकारी है।

मस्तिंष्कावरन प्रदाह, श्लैष्मिक कला प्रदाह, कारवंकल फोड़ा प्रदाह में गुणकारी है।।

कैंररोसो नंबर 13. C13

कार्यक्षेत्र तथा गुणधर्म

यह औषधि डिप्थीरिया रोग की, उत्तम बनी दवाई है।

हलक कैंसर, हलक प्रदाह की, करती उचित सफाई है।।

डिप्थीरिया रोग में ,सी1, सी 13 से, डॉक्टर दवा करेगा।

धैर्य पूर्वक इलाज करें तो , कभी कोई रोगी नहीं मरेगा।।

जीर्ण प्रकार के पेचिश, दस्त में, प्रथम डाइल्यूशन देते हैं।

जीर्ण रोग पेचिश दस्त से, रोगी आराम ले लेते हैं।।

कैंसरोंसो नंबर 14 C14

कार्यक्षेत्र तथा गुणधर्म

ए3,सी13 तथा एफ1 को, मिलाकर यह दवा बनती है।

बर्बादी श्लैष्मिककला, त्रीब्र डिप्थीरिया में चलती है।।

स्वर यंत्र प्रदाह, हलक प्रदाह, टांसिल की जहां प्रदाह है।

खूनी पेचिश क्षय रोग, कैंसर से, रोगी जहां तबाह है।।

कैंसरोंसो नंबर 15 C15

कार्यक्षेत्र तथा गुणधर्म

सी15 की लॉर्ड नामक अंग्रेज पर ,सर्वप्रथम हुई परीक्षा थी।

कैंसर रोग था अंग्रेज को , सी 15 से हुई सुरक्षा थी।।

इस अंग्रेज के नाम पर, लार्ड नाम पड़ा इसका है।

आमाशय तथा आंत पर, विशिष्ट प्रभाव पड़ा जिसका है।।

आंत उतरने रोग की भी, यह उत्तम बनी दवाई है।

अच्छे होते हैं हरे घाव , हांर्निया में आजमाई है।।

हर्निया रोग में एक माह तक, आराम करना जरूरी है।

एक माह बिस्तर पर लेते , यहां उसकी मजबूरी है।।

कैंसरोंसो नंबर 16 C16

कार्य क्षेत्र तथा गुण धर्म

यह औषधि सी 13 तथा ए3 से, मिलकर बनती है।

नाभि सूजन आमाशय तथा , आंत्र प्रदाह में चलती है।।

इसका कार्य सी 15 की भांति, परंतु प्रभाव उससे गहरा है।

पेट की वायु दूर करने में, झंडा इसका लहरा है।।

कैंसरोंसो नंबर 17 C17

कार्य क्षेत्र तथा गुण धर्म

मूत्र में पथरी, मूत्र जलन, पेशाब बंद जब होती है ।

मूत्र रुकना, पक्षाघात , मूत्राशय टीवी को खोती है।।

अनजाने में पेशाब बिस्तर पर, हरती मूत्राशय निर्बलता को।

गुर्दे व पित्ताशय पथरी में, सराहते इसकी सफलता को।।

तेज मात्रा सुखी गोली, प्रयोग पेशाब की बंदी में।

हल्की मात्रा बिस्तर पर पेशाब, देते आदत गंदी में।।

अधिक पेशाब होने पर , हल्की मात्रा देते हैं।

बंद पेशाब में तीव्र मात्रा, अवयवों को उत्तेजित कर देते हैं।।

अधिक पेशाब ,बंद पेशाब, प्रयोग मूत्र संस्थान है ।

डॉक्टर पुरुषोत्तम कहते हैं, पैथी इलेक्ट्रो महान है।।

भाग 9. Part 9

कान्स्टीचूशनल रेमीडीज

Constitutional Remedies

बेनरियो समूह

Venereo Groups

Ven 1 Ven2. Ven3. Ven 4 Ven 5

वेनेरियो नंबर 1

Venereo No 1 OR VEN1

कार्यक्षेत्र एवं गुणधर्म

एस1 के बाद वेन1 का, सबसे महत्व स्थानहै।

सुजाक, उपदंश अच्छा करने में, सिद्ध हुई महान है।।

सुजाक, उपदंश रोग कहीं, स्थाई नहीं होते हैं ।

जननेंद्रिय को कौन कहे, अन्यत्र दुखदाई बहुत होते हैं।।

बांझपन ,कैंसर, कंठमाला तथा, प्रदर रोग हो जाता है ।

मस्तिष्क रोग ,क्षय,लकवा, गलन हड्डी तक हो जाता है।।

पूरे शरीर में रोग होता , रोगी होत बेचैन है।

अधिक पीड़ा कष्ट के कारण, रोगी न मूदता नैन है।।

उपदंश रोग हो जाने पर, भयंकर रोग हो जाता है।

जब एलोपैथी डॉक्टर, रांग डायग्नोसिस कर जाता है।।

होम्योपैथी में मरकरी का, है उपयोग सही।

तीव्र मात्रा में देने से, बिगड़ता है संयोग वही।।

क्रॉनिक डिजीज में दब जाते हैं, अन्य रोग पुराने ।

सुजाक रोग के इलाज से, रोग अच्छा होते अनजाने।।

प्रत्येक प्रकार के जहर को, बाहर निकाल देती है ।

मूत्र मार्ग में दबा घाव हो, उसको आराम कर देती है।।

उपदंश रोग शुरुआत में हो, इसका प्रयोग हितकारी है।

प्रथम डाइल्यूशन वेन1 का, लेना वहां जिम्मेदारी है।।

वेनेरियो नंबर 2

Venereo No.2 OR VEN 2

कार्यक्षेत्र तथा गुणधर्म

यह औषधि वेन 1,एस2 तथा सी 17 से निर्मित है।

मूत्र मार्ग ,मूत्राशय भगंदर, अच्छा करने में चर्चित है।।

सुजाक से हो मूत्र मार्ग में मांस, को भी अच्छा करती है।

अगर खराब है शिश् न के आगे की त्वचा, उसकी रक्षा करती है।।

वेनेरियो नंबर 3

Venereo No.3 OR VEN 3

कार्य क्षेत्र तथा गुणधर्म

इस औषधि में वेन 1,सी 5 तथा ए 2 मिलता है।।

अच्छा होता है जीर्ण उपदंश, जो शरीर में पलता है।।

पहले दर्जे से तीसरे दर्जे तक की, प्रदाह में लाभकारीहै।

ज्ञानेंद्रिय रोग स्त्री पुरुषों का, वेन 3 वहां गुणकारी है।।

ग्रंथि के शलैष्मिक कला के प्रदाह, में प्रयोग सदा सुखदायक है।

हो गया किसी को जीर्ण उपदंश, वहां पर लाभदायक है।।

वेनेरियो नंबर 4

Venereo No.4 OR VEN4

कार्यक्षेत्र तथा गुणधर्म

इस औषधि मे ए 2, वेन 1 तथा बर 1 मिलाये जाते हैं।

विषैले घाव तीव्र सुजाक, वेन 4 से भगाए जाते हैं।।

वेन 1 की भांति इसका, कार्य सदा होता है।

अच्छा होता है विषैला घाव, जो इससे बघा होता है।।

वेनेरियो नंबर 5

Venereo No.5 OR VEN 5

कार्य तथा गुणधर्म

इस औषधि में ए 3 एस 5 तथा वेन 1 सम्मिलित है।

उपदंश के दूसरे दर्जे में जब प्रदाह हो, प्रयोग इसके चर्चित हैं।।

त्वचा रोग उपदंश के कारण, जिसमें प्रदाह नहीं होती है।

प्रदाह न हो श्लैष्मिक कला में, प्रयोग वहां होती है।।

भाग 10

लिक्विड रेमीडीज

Liquid Remedies

इलेक्ट्रिकसिटीज या इलेक्ट्रा लिन्स

Electricities OR Electalins

W.E. R.E. G E. Y E. B.E. APP

सफेद बिजली. न्यूट्रल(=)

व्हाइट इलेक्ट्रिसिटी

White Electricity OR W.E

ह्वाइट फ्लूड

White fluid

इलेक्ट्रिसिटा बीएनका

Electtricita Bianca

W.E.

सफेद बिजली न्यूट्रल है , कार्य इसका सामान्य है।

वातज निर्बलता पर है कार्य इसका, हर रोगों पर मान्य है।।

अधिक जागना, अधिक काम करना, जब कम आराम कोई करता है।

अधिक मानसिक कार्य से शरीर में, न्यूरेस्थेनियां रोग पलता है।।

दांत पीड़ा, अधिक जल जाने में, तुरंत आराम कर जाती है।

मूत्राशय तथा वायु प्रणाली, तथा हृदय की चाल रुकने में काम कर जाती है।।

हल्की मात्रा में प्रयोग करने से, शांति प्रदान कर जाती है।

अधिक मात्रा से संवेदिक नाडिंयो को ,तुरंत शक्ति मिल जाती है।।

प्यास हरती पीड़ा नाशक, नींद नहीं जब आती है।

कांम्प्रेस लगाते तलवे मे , तुरंत नींद आ जाती है।।

मस्तिष्क प्रदाह, नेत्र प्रदाह दमा, हृदय शूल हिस्टीरिया में।

टीवी ,गठिया, मिर्गी पागलपन, खांसी जुकाम शरीरिया में।।

सिर दर्द ,लू मारना, ठंडा मारना, पेट दर्द में भी प्रयोग है।

सांप तथा अफीम विष में, अन्य औषधियां के साथ प्रयोग है।।

रेड इलेक्ट्रिसिटी धनात्मक +

Red Electricity. OR R.E

रेड लिक्विड Red Liquid

फ्लूड रोट Fluid Rot

फ्लूड रीड Fluid Reed

इलेक्ट्रिसिटा रोसा

Elettricita Rossa

लाल बिजली

कार्य क्षेत्र तथा गुणधर्म

यह बिजली धनात्मक है, ऋणात्मक रोगों पर बहु चर्चित है।

तुलना है कोरामीन से , रक्त प्रकृति पर प्रचलित है।।

कंठ माला, दर्द नाशक, अत्यधिक बल बढ़ाती है।

उत्तेजना को पैदा करती, तथा प्रदाह को घटाती है।।

शोथ नाशक, बेहोश नाशक, दूर करती हैंजा कमजोरी को।

हार्ट फ़ेल, ठंडा मारना, पागलपन बलजोरी को।।

झुनझुनाहट ,पुरानी चोट, स्मरण शक्ति जब घटती है।

वीर्य दोष सुखंन्डी निमोनिया, आर ई से कटती है।।

नेत्र दृष्टि का लोप होना, मूत्र स्राव बिना इच्छा से।

मस्तिष्क दुर्बलता, मस्तिष्क रोग कटती एक परीक्षा से।।

ग्रीन इलेक्ट्रिसिटी

Green Electricity

OR G.E

फ्लूड ग्रीन Fluid Green

इलेक्ट्रिसिटा बरडे

Elettricita Verde

हरि बिजली ऋणात्मक -

कार्य तथा गुणधर्म

यह ऋणात्मक शक्ति से निर्मित, धनात्मक रोगों पर चलती है ।

सड़न गलन को दूर करती ,जब कभी ऐसी बींमारी पलती है।।

एंटीसेप्टिक कहलाती, शूल को करती नाश है ।

खोंचा मारने जैसा दर्द से , जब कोई रोगी उदास है।।

प्राकृतिक गुण घांव भरना, कैंसर नाशक गठिया तथा जहरबाद है ।

रक्त, विष, सड़न, गलन दर्द नाशक, रोगी होत अबाद है।।

मुंह में घाव मवाद पड़ गई, तालू में भी वैसा है।

प्रयोग कंठ , घाव मवाद पड़ गई जैसा है।।

इस बिजली के कंपोनेंट में, नामक तत्व है।

एस्प्रिन जैसा दर्द नाशक, असह्य पीड़ा में महत्व है।।

एलो इलेक्ट्रिसिटी

Yellow Electricity

OR Y.E

फ्यूड गेल्ब Fluid Gelb

फ्यूड येलो Fluid yellow

इलेक्ट्रिसिटा जीएला

Elettricita Gialla

पीली बिजली ऋणात्मक

कार्य तथा गुणधर्म

ऋणात्मक शक्ति से निर्मित , रस प्रकृति के रोगियों को होती सदा अनुकूल है।

धनात्मक रोगों पर कार्य करती, लाल बिजली के कुपरिणामो के प्रतिकूल है।।

एलर्जी ,खुजली, जुलपुत्ती, करती अच्छा अधकपारी है।

शोथ, श्वास,गर्भवती के मितली, क्रृमि से जिसे लाचारी है।।

गुण प्राकृतिक ,कब्ज, कृमि नाशक, तथा शक्ति को बढ़ाती है।

वमन, एलर्जी तथा ऐठन नाशक , रक्त कमी दूर कर जातीहै।।

कब्ज ,पीलिया, सन्निपात, मिर्गी दूर करती ऐठन हिस्टीरिया को ।

टेटनस, जकड़न, चिल्लाना, भागना, करती अच्छा अधकपरिया को।।

पक्षाघात ,जरायूशूल झुनझुनी, साइटिका में लाभदायक है।

यकृत, कीड़नी ,कपड़ा फाड़ना, पेट दर्द में सुखदायकहै।।

ब्लू इलेक्ट्रिसिटी

Blue Electricity OR B.E

फ्यूड ब्लैउ Fluid Blau

फ्लूड ब्लू Fluid Blue

इलेक्ट्रिसिटा एजूरा

Electricita Azzurra

नीली बिजली धनात्मक +

कार्य तथा गुणधर्म

धनात्मक फोर्स से युक्त, रक्त प्रकृति के लिए उपयोगी है।

ऋणात्मक रोग में प्रचलित , बहते रक्त रोकने में सहयोगी है।।

हृदय रोग, शोथ प्रदाह नाशक, शक्ति बढ़ाने वाली है।

अगर किसी को सर्दी खांसी, कफ निकालने वालीहै।।

प्रसूति रोग, खांसी दमा, जिसको होत अफारा है।

छोटी चेचक ,शोथ, सूजाक, बी ई करत सहारा है।।

लहर के साथ दर्द होना, ज्वर जब प्रदाह युक्त हो।

क्रृमि रोग तेजाबी पेशाब, होता जब मूत्रकृच्छ है।।

सिर मे लहर, वीर्य क्षीणता, कमजोरी होत शरीर में।

कान बहना, जालोदर, रतौंधी, प्रयोग खूनी बवासीर में।।

रक्त संचय, रक्त कैंसर, मंदाग्नि, आंख में लाली है।

रक्तस्राव रक्ततिसार, प्रभाव इसका तत्काली है।।

आंख आना, आंख में पानी, जब आंख में होती दर्द है।

रक्त वमन, घांव, रक्त, मूत्र, वहां पर देना फर्ज।।

खूनी पेचिश, चक्कर आना, देते इसे भी टी वी में।

प्रदर तथा हथियार से कटना, रक्त स्राव जब धीमी में।।

रक्त प्रकृति तथा स्त्री रोग के लिए, यह उत्तम मेडिसिन है।

प्रयोग इसका करके देखिए, यदि होता नहीं यकीन है।।

अगर कट जाये कोई स्थान तो, खून बंद कर देती है।

ब्लड ग्रुप की बनी है बिजली, तुरंत आराम कर देती है।।

डॉक्टर पुरुषोत्तम कहते हैं, प्रशंसा इसकी काफी है।

अगर कहीं पर गलती हो तो, सबसे मांगत माफी है।

स्क्रीन वाटर Skin water

एक्वा परला पेली

Acqua Perla Pelle

ए पी पी A.P.P.

त्वचा जल

कार्य तथा गुणधर्म

त्वचा को सुंदर ,कोमल तथा, स्वच्छ बनाने वाली है।

स्क्रीन वॉटर ,हाउस वॉसर तथा, ए.पी.पी.कहलाने वाली है।।

बात सूत्रों ,त्वचा ग्रंथियो तथा त्वचा पर इसका कार्य है।

त्वचा रोग हो अगर किसी को, प्रयोग इसका अनिवार्य है।।

त्वचा को पुनर्जीवित कर देती, त्वचा की दाग मिटाती है।

पौष्टिक तत्व देती त्वचा को, साथ ही मुलायम बनाती है।।

खुजली, जुलपुत्ती , अकौंता तथा दिनाय मिटा देती है ।

छिल जाना, जल जाना, लेप से नेत्र ज्योति बढ़ा देती है।।

भूसी उतरना, त्वचा की लाली, खुश्की पर भी मलते हैं।

प्रभाव त्वचा नीचे काफी दूर तक, लेप करने से चलते हैं।।

स्त्री, पुरुष तथा बच्चों के, समस्त चर्म रोग को दूर करें ।

चेहरे के दाग, धब्बे , झूर्री खुजली को मजबूर करें।।

अपरस, जुलपुत्ती, त्वचा फटना, फटती जब बेवाई है।

त्वचा मुलायम, चिकना चमकदार, एक्जिमा की उत्तम दवाई है।।

डा.पुरुषोत्तम कहते सूनो चिकित्सक भाई।

त्वचा रोग कै दूर करने की, सर्वोत्तम बनी दवाई।।